THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

तुम्हारी आँखे तुम्हें धोखा न देने पाएँ!

Don't let your eyes fool you!

Author- Michael Mooslin

Christian Science Sentinel Vol 114, No. 03 & 04, January 16 & 23, 2012

मेरी दादी को एक छोटी लड़की की कहानी सुनाना बहुत पसंद था जो कि क्रिश्चियन साँयस सन्डे स्कूल में आती थी और खेलते समय उसने अपनी उंगली पर चोट लगा ली थी। जब लड़की के पिता घर आए और उसे चोट दिखाने को कहा, उसने उत्तर दिया, "ओह पापा, जिसे आप अभी देखने वाले हो, कृप्या उसे मत देखो।" दूसरे शब्दों में भौतिक चित्र द्वारा न फँसने के लिए सावधान रहो, नहीं तो जो आप देख रहे हो, उससे धोखा खा जाओगे!

अपनी सन्डे स्कूल कक्षाओं में आध्यात्मिक दृष्टिकोण के बारे में तर्क बनाने के लिए कितनी बार मैंने उस व्याख्यान का इस्तेमाल किया है। तथा हमारे जीवन में परमेश्वर की भूमिका समझने के लिए, मैंने कई बार युवा व्यक्तियों को आमंत्रित किया, पगडंडी पर कीचड़ की कल्पना करने के लिए, जहाँ सूर्य नीचे की ओर आ रहा हो तथा उसे भाप बना कर उड़ा रहा हो। क्या सूर्य ने कीचड़ को पहचाना या जब पानी भाप बन का उड़ रहा था, उसे छुआ भी? बिल्कुल नहीं! उसी प्रकार परमेश्वर का प्रकटीकरण (क्राइस्ट, या परमेश्वर का प्रकाशित वचन) सीधे हमारे जीवन की भौतिक, इन्सानी मिथ्याधारणा पर आता है तथा उसे बदल देता है, जिस तरह से सूर्य कीचड़ को भाप बना कर उड़ा देता है।

मेरे मन में बार-बार यही आता रहता कि जब हम किसी भी चीज़ को देखते हैं, चाहे वह एक ज़ख्मी उंगली हो, एक कीचड़ या एक सुन्दर सूर्यास्त, हम या तो आध्यात्मिक या फिर भौतिक दृष्टिकोण से देख रहे होते हैं। वास्तव में भौतिक परिस्थिति को नहीं परन्तु भौतिक प्रतीत होने वाली परिस्थिति के प्रति हमारे बोध को बदलने की ज़रूरत है। हमें सचमुच कीचड़ द्वारा व्यक्त किए जाने वाली और अधिक धूप को देखने की ज़रूरत नहीं है; हमें केवल कम कीचड़ को देखने की ज़रूरत है! इसी प्रकार, हम परमेश्वर को भौतिक पदार्थ में नहीं देखते। जैसे हम आध्यात्मिक गुणों पर (प्रेरणा के लिए सुनने द्वारा) ध्यान केंद्रित करते हैं, हम अब भौतिक पदार्थ में आत्मा का बढ़ा हुआ प्रकटीकरण नहीं देखते, हम केवल कम भौतिक-पदार्थ देखते हैं। आत्मा हर समय हर जगह है। हम केवल चीजों की इन्सानी समझ द्वारा भटक जाते हैं, जैसे कि बाइबल के दृष्टांत में जंगली घास तथा गेहूँ साथ-साथ बढ़ते हैं जब तक कि फसल कटाई के समय हमें अंतर करने में मदद न मिले (मत्ती 13:18-30 देखो)

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

इस नीतिकथा के पहलु साँयस एण्ड हैल्थ में फैले हुए एक महत्वपूर्ण विषय की तरह हैं। **आत्मा, परमेश्वर** की सर्वस्वता तथा भौतिकता की निरर्थकता (तथा इन विरोधियों की एक तुलना) कई लेखों में प्रकट होती है–नश्वर/अनश्वर; इन्सानी/ दिव्य; दैहिक/ निराकार; भौतिक/आध्यात्मिक; सत्य/त्रुटि; जीवन/मृत्यु; प्रेम/नफरत; बीमारी/ सेहत; और हाँ जंगली घास तथा गेहूँ। यह विरोधी उसी तरह कभी नहीं मिल सकते, जिस तरह रोशनी तथा अंधकार, या सूर्य तथा कीचड़। कई बार शायद यह दिखाई दे कि भौतिक, इन्सानी चित्र और अधिक **आत्मा** का प्रकटीकरण कर रहा है, परन्तु वह सच नहीं है। यह कल्पना करना दुष्कर होगा कि एक जंगली घास (या खरपतवार), गेहूँ के गुणों के अपना रही है या गेहूँ जंगली घास की विशेषताओं को सम्मिलित कर रही है।

जब हम किसी भी चीज़ को देखते है, चाहे वह एक ज़ख्मी उंगली हो, एक कीचड़ या एक सुन्दर सूर्यास्त, हम या तो आध्यात्मिक या फिर भौतिक दृष्टिकोण से देख रहे होते हैं।

उसी प्रकार, अपनी संरचना में इन्सानी कभी भी दिव्य नहीं बन सकता, तथा दिव्य कभी भी इन्सानी विशेषताओं को शामिल नहीं कर सकता। मेरी बेकर ऐडी ने लिखा: " प्रत्येक स्थिति में दिव्य को इन्सानी पर विजय प्राप्त करनी होगी।" (साँयस एण्ड हैल्थ पृष्ठ 43) जैसे ही हम अपने नज़रिये का आध्यात्मिकीकरण करते हैं तथा अपने दिव्य गुणों को और अधिक देखते हैं, हमें सूचित करता हुआ भौतिक प्रमाण उतने अनुपात में लुप्त हो जाता है। और एक जगह पर उन्होंने लिखा:" अस्तित्व की वास्तविकताएँ" विद्यमानता की दो विरोधी अवस्थाएँ नहीं होती। हमें एक वास्तविक दिखाई देना चाहिए, तथा दूसरा अवास्तविक, नही तो हम अस्तित्व की साँयस को खो देंगे। किसी मूल सत्य में स्थिर न रहते हुए हम 'ज्यादा खराब को बेहतर तर्क' से साथ दिखा सकते हैं; और अवास्तविक नकाबपोश व्यक्तियों को अपनी सोच में वास्तविक की तरह दिखा सकते हैं" (Unity of Good, पृष्ठ 49)।

अपने नज़रिये को अभौतिक बनाने के लिए उस आध्यात्मिक प्रेरणा के लिए विनम्रता से सुनने की ज़रूरत है जो कि हमें इस योग्य बनाती है कि "जो हम देख रहे हैं उसे न देखें" तथा "दिखावट के अनुसार न आँकें" (यूहन्ना 7:24)। प्रतिदिन एक सचेत प्रयास के साथ हम अपने अनुभव में सदा उपस्थित रहने वाले आध्यात्मिक प्रभाव का साक्षात्कार कर सकते हैं तथा उसे श्रेय दे सकते हैं।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.